DCP (L) No F. 2 (P-22) Press / 2014 RNI - DELPRA/2015/59918 ISSN. 2454-5252 July - Dec 2017

णमो जिणाणं

# पागद-भासा PĀGADA-BHĀSĀ

प्राकृत-भाषा पाउअ-भासा पाइय-भासा PRAKRIT LANGUAGE

Year-3 | Volume-6 | The First News Paper in Oldest Indian Prakrit Language, Hon. Editor : **Dr. ANEKANT KUMAR JAIN**

## पाइयं अंतरट्ठियं सम्मेलणं

### 3-6 नवम्बर 2017

सवणबेलगोलाए सिरीखेत्ते कण्णाडगपंते चत्तारि दिवसीय पाइय अंतरट्ठिय सम्मेलनाए आयोजणं गोमटेसबाहुबली महामत्थगाहिसेग महोस्सव 2018 कमेटीए तत्वावहाणे बाहुबली पाइय विज्जावीढ सवणबेलगोलाए आयोजणे जगद्गुरु कम्मजोगी स्वस्तिसिरी चारुकित्ति भडारग महासामी सवणबेलगोलाए मग्गदंसणे सब कमेटी पाइय अंतरट्ठिय सम्मेलनाए संजोअगत्ते सवणबेलगोलाए कण्णाडगे चत्तारि दिवसीय पाइय अंतरट्ठिय सम्मेलनाए आयोजणं 3-6 नवम्बर 2017 तिहीसु भविस्सहिइ।

इमम्मि सम्मेलणम्मि देस-विदेसस्स 100 पाइयभासाए विज्जजणा णिय सोहपत्ताणि वाचणं करिस्सहिन्ति एवं च 100 पाइयभासाए जुवा विज्जजणा वि पडिनिहिरूवेण संवादं करिस्सहिन्ति। इमस्स पाइय अंतरट्ठिय सम्मेलनाए पमुहं विसयं अत्थि- पाइयगंथेसु उवलद्धं विस्सस्स पाईण साहिच्चइय च विरासदं तहा वइग्याणिग तच्चाणां पगासणं, जेण विस्से संति सोहारदं च उक्कस्सं हवदु। इमम्मि अवसरे पाइय-अवहंस भासाणं महत्तपुण्ण गंथाणं पगासणं वि हविस्सहिइ। इमम्मि सम्मेलणम्मि साहिच्चइय पदस्सणी, कज्जगमं एवं पाइय कविगोटठीए वि आयोजणं हविस्सहिइ । सम्मेलणस्स सव्व अज्झक्खं पो. पेमसुमण जइण संति। - Dr. Kalpna Jain, New Delhi

## आयरिय-पेम्मसुमण-जइण-अमिय-महोस्सवं

मोहनलालसुखाड़िया विस्सविज्जालये, उदयपुरणयरस्स पाइयविउसं आयरिय पेम्मसुमण जइण महाभागा सवणबेलगोलाए ठिदेण बाहुबली पाइय विज्जापीढेण पाइय णाणभारदी अन्तरट्ठिय पुरक्कारेण सम्माणिदा। इमम्मि अवसरम्मि अक्खरपाहुड नामगं अहिणंदण समारिगा वि विदरियं भावेज्ज। इमम्मि अवसरे ते विज्जाभूसण लोअमंगलं न्यासेण आयरिय विज्जाणंद मुणिराज पाइय-वाङ्मय-पुरक्कारेण वि सम्माणिदा।

## अहिल-भारदीय-सक्कय-सम्मेलणं संपण्णं

सिरी गोमटेसबाहुबली महामत्थकाहिसेओ-2018 अवसरम्मि सवणबेलगोला सिरीखेत्ते 7 जूणतो 9 जूण 2017 पज्जत्तं आयरिय-वड्ढमाणसायराणं पावण-साणिज्झम्मि, कम्मजोइ-स्वस्ति-सिरी-चारुकित्ति-सामी साणिज्झम्मि अहिल-भारदीय- सक्कय-सम्मेलणं होसी। सम्मेलणम्मि भारदस्स सव्वे सक्कयविस्स-विज्जालअस्स कुलवई, सक्कय-अकादमी, संठाणस्स सचिवो/निदेसओ तहा विस्स पसिद्धो सताधिओ सक्कय-विउसाणं समागमो होसी। "जइण-आइरियाणं सक्कय-साहिच्च-विआसे जोगदाणं" - इइ विसओपरि सव्वे विउसाणं उग्गारं, सोहपत्तं अ होसी। समारोहम्मि सक्कय-कव्व-संगोट्ठी वि होसी। संगोट्ठी पमुह संओजगो पो. फुल्लचंदो पेमी महाभागो होसी। सह-संओजगो डॉ. अणेकंद जइणो तहा च डॉ. देवेन्दकुमारो होसी। समारोहस्स अज्झक्ख अभिराजराजेन्दमिस्सो, मुख्यातिथि पउमसिरी रमाकांतसुक्लो, सारस्वतातिथि डॉ. हम्पानागरज्जैया, तहा च मुख्य अज्झक्ख सिरीमती सरिता एम.के. जइण, मुख्य-कज्ज-दरसी सिरी विणोद दोण्णवर, सिरी सतीस होसी। - Dr. Arihant Jain, Mumbai

## रट्ठिय-जइण-विउसाणं सम्मेलणं संपण्णं

सवणबेलगोला, कण्णाडगपंते, 1 तो 5 अक्टूबर 2017 पज्जंतं रट्ठिय-जइण-विउसाणं सम्मेलणं कम्मजोई-स्वास्ति-सिरी-चारुकित्ति-सामी साणिज्झम्मि होसी। समारोहस्स सव्वअज्झक्ख डॉ. सेयांस कुमार जइण, मुख्ख संयोजओ सिरी असोक बाड़जात्या होसी। सम्मेलणम्मि पंचसत विउसाणं सम्माणं होसी।

EDITORIAL

# 'वसुणंदि-सावयायारे झाणस्स सरूवं'

जइण-जोग-झाण-परंवराए सावयायारस्स बहुमहत्तं वट्टदि। रयणसारगंथे उत्तं- 'अज्झयणमेव झाणं'[1] एवं आयरिय वसुणंदि विरअिओ 'वसुणंदिसावयायार' णामकं पागदगंथम्मि भावपूआ पसंगम्मि आयरिय झाणस्स वण्णणं कुणइ।

जइण झाणपसंगम्मि अत्तझाणं, रूद्दझाणं, धम्मझाणं, सुक्कझाणं एदे चत्तारि झाणाणि होंति। तम्मि धम्मज्झाणं, सुक्कझाणं पसत्थझाणं होंति। आयरिय वसुणंदि भावपूआ पसंगम्मि धम्मझाणस्स भेअरूवेण पिंडत्थं, पदत्थं, रूवत्थं, रूवातीदं-एदे चत्तारि झाणाणि भणंति।[2]

**पिंडत्थं च पयत्थं रूपत्थं रूववज्जियं अहवा ।**
**जं झाइज्जइ झाणं भावमहं तं विणिद्दिट्ठं ॥**

**1. पिंडत्थझाणं -**

**सियकिरणविप्फुरंतं अट्ठमहापाडिहेरपरियरियं।**
**झाइज्जइ जं णिययं पिंडत्थं जाण तं झाणं ॥**

सियकिरणेहिं विप्फुरायमाणो तहा अ अट्ठमहापाडिहेरेहिं परियरियमाणो जं सुद्धोप्प सरूवं झाइज्जइ तं पिंडत्थं झाणं। एवं णिच्चयणयेण वण्णणं करिदूण ववहार णयेणवि आयरिय वसुणंदि लोकत्तयस्स झाणस्स वणण्णं करेंति। णामिठाणे मेरुपव्वतस्स, तस्स अहोभागे अहोलोअस्स, तस्स उड्ढभागे उड्ढलोअस्स, तस्स तिय्यगभगे मज्झलोअस्स, संकधपज्जत्तं सव्वत्थसिद्धस्स झाणं करेइ। ललाटे सिद्धसिलाअ झाणं करेइ । एवं णिजदेहस्स झाणं ववहारे पिंडत्थ झाणं हवई ।[4]

**( 2 ) पसत्थझाणं-**

पयत्थझाणस्स सरूवं भणदि -

**जं झाइज्जइ उच्चारिऊण परमोट्ठिमंतपयममलं।**
**एयक्खरादि विविहं पयत्थझाणं मुणेयव्वं ॥**[5]

अत्थं - एक्खरं आदि करिदूण विविहं परमेट्ठिमंतपयममलं उच्चारिऊण जं झाइज्जइ तं पयत्थझाणं मुणेयव्वं। अर्हं पदस्स झाणं करेइ इइ भणदि-

**सुण्णं अयारपुरओ झाइज्जो उड्ढरेह-बिंदुजुयं।**
**पावंधयारमहणं समंतओ फुरियसियतेयं॥**[6]

3. **रूवत्थझाणं** -

आयास-फलिहसंणिह-तणुप्पहासलिलणिहि-णिब्बुडंतं णर-सुर-तिरीड-मणि किरणसमूह-रंजिय-पयं-बुरूहो, सेट्ठ पाडिहेरेहिं परिउट्ठो तहा समवसरणमज्झगओ अणंतच उट्ठयण्णिओ पवण-मग्गट्ठो अरहंताणं परमप्पाणं एवं जं झाइज्जइ तं रूवत्थं झाणं जाण ।[7]

**4. रूवातीदं झाणं** - णाणदंसणसरूवो, वण्ण-रस-गंध-फासेहिं रहिदो सुद्ध- अप्पाणं एवं जं झाइज्जइ तं रूवरहियं झाणं अत्थि-

**'वण्ण रस-गंध-फासेहिं वज्जिओ णाण- दंसणसरूवो।**
**जं झाइज्जइ एवं तं झाणं रूवरहियं ति॥** [8]

एवं वसुणंदि सावयायारे भावपूआपसंगे झाणस्स बहु सुंदरं वण्णणं अत्थि।

**संदभ्भो :-**

1. रयणसारो, गाहा 90
2. वसुणदिसावयायारो, गाहा - 458
3. वसु. सा. गा. 459
4. वसु. सा., गाहा-460 तो 463 पज्जत्तं ।
5. वसु. सा., गाहा - 464
6. वसु. सा. गाहा - 465
7. वसु. सा. गाहा-474- 475
8. वसु. सा. गाहा - 463

- Dr. Anekant Kumar Jain

णमो जिणाणं
With Best Compliments from
SHRI SURESH JAIN, IAS
Bhopal
President
Shri Digambar Jain Sidhha Kshetra,
Naina Giri, Dalpatpur, Sagar, MP

## णेणागिरि -पूया

**णेणागिरि-रेसिंदिगिरिराउ, णेमि जिणपासे हु अदि साउ।**
**वरदत्तउ इंदउ गुणउ दत्तु, मुणि-दत्तउ सायर-सूरि-पत्तु॥**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिपार्श्वप्रभुवरेभ्यो रेशिंदिगिरि-नैनागिरि-सिद्ध क्षेत्रेभ्यो समागत-वरदत्त-मुनीन्द्र-इन्द्र-दत्त-गुणदत्त-सागर-प्रभृति-समस्त- गुणेभ्यो-अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

।। पाद कुलक ।।

**णीर शुद्ध-भर-झारिउं उँ, अग्गे देउ मुणिं दु सोम्मे।**
**इंद-मुणिंद-वर-दत्तउ सूरे, गुण्ण सायरउ रेसिंदि-पूरे॥१॥**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिपार्श्वप्रभुवरेभ्यो रेशिंदिगिरि-नैनागिरि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो समागद-वरदत्त-मुनीन्द्र-इन्द्र-दत्त-गुणदत्त-सागर-प्रभृति-समस्त-सिद्धमुनेभ्यो-जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामिति स्वाहा।

**चंदण सारउ केसर-संगे, तावउ णासउ- चंदण-अंगे।**
**इंद-मुणिंद-वर-दत्तउ सूरे गुण्ण सायरउ रेसिंदि-पूरे॥२॥**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिपार्श्वप्रभुवरेभ्यो.....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

**अक्खद-अक्खय-पत्तउ-पत्ते, चंद समं सम-सोम्मउ- गत्ते।**
**इंद-मुणिंद-वर-दत्तउ सूरे, गुण्ण सायरउ रेसिंदि-पूरे॥३॥**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिपार्श्वप्रभुवरेभ्यो.....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

**गंधिद-पुप्फउ अप्पउ गंधं, काम-विणासउ सव्वउ संधं**
**इंद-मुणिंद-वर-दत्तउ सूरे, गुण्ण सायरउ रेसिंदि-पूरे॥४॥**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिपार्श्वप्रभुवरेभ्यो .....कामबाणविधवंसनाय पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

**अप्प-रसा सउ णेवज-णंदं, सुद्धं-पदारथ-सद्दउ-छंदं।**
**इंद-मुणिंद-वर-दत्तउ सूरे, गुण्ण सायरउ रेसिंदि-पूरे ॥5॥**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिपार्श्वप्रभुवरेभ्यो......क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**मिच्छ विणासण सम्मउ दीवं ए, अप्प-पगासग-णिम्मल-णीविं।**
**इंद-मुणिंद-वर-दत्तउ सूरे, गुण्ण सायरउ रेसिंदि-पूरे ॥6॥**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिपार्श्वप्रभुवरेभ्यो.....मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

**कम्म-इंधणउ जारउ धूवं, खेउ पावण-दस-अंगउ रूवं।**
**इंद-मुणिंद-वर-दत्तउ सूरे,गुण्ण सायरउ रेसिंदि-पूरे ॥7॥**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिपार्श्वप्रभुवरेभ्यो.....अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

**सोम्म अम्ह पिउ-सव्वउ रम्मो, मोक्ख-पंथ-फल-दाउ धम्मो।**
**इंद-मुणिंद-वर-दत्तउ सूरे, गुण्ण सायरउ रेसिंदि-पूरे ॥8॥**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिपार्श्वप्रभुवरेभ्यो....मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामिति स्वाहा।

**णीर-सुचंदण-अक्खद-पुप्फउ, णेवज-दीवउ-धूवउ फुल्लउ।**
**सूरिवरं गुणसायर-धीरउ, आदि मुणिंदउ दत्तउ अग्घउ ॥8॥**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिपार्श्वप्रभुवरेभ्यो......अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

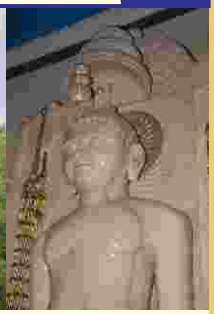




**॥ जयमाला॥**

(दोहा)

**णाण-दंसण-चारित-तव, वरदत्तादि मुणिंद।**
**सिद्ध सुखेत्त-णेणागिरि रिसहाचल- रेसिंद॥**

बंधुः- पास समुसर एहु सु राजे, सिद्ध-पहुवर - सिद्ध - सुधारे।
लोय -तिहुवण कंत-पभासे, विस्ससेण-पहु वाम-पियारे।।1।।
णेणगिरिवर -देस -सुदेसे, सिद्ध-अमिद-सुखेत्त-कहाए।
पंच-मुणि सर दत्त मुणीसे, घाद-चउ घण-घोर णसाए ।।2।।
सत्थ-सुदधर-सुत्त गुबेसी, रेसिंदिउ गिरि सिद्ध कहाए।
केवल-सयल-णाण-सुदेसी, णंदउ जण-मण वरसाए ।।3।।
णेमि-कुँवरउ अत्थ वि णंदं, दिण्ण-जदिवर-साधक छंदं।
बिंझगिरिवर-पंत-सुवंदं, संत-मुणिगण-सम्मग-संदं ।।4।।
सम्मग-रदण धम्म-सुगंधं, पोम्म-सरोवर-मज्झ-पबंधं।
णाण-णयव-णयणाहिरामं, रेसिंदि-गिरिं-णद-सुरामं ।।5।।
परस-रस-रस-णिज्झराणं, सङ्ख-सइचर-झर-झराणं।
णेमि-पडुवर-करुणा-गाणं, गाइ गगण गदी खेचराणं ।।6।।
एस गिरि-फण फणावलीणं, णेमि पहु पहुचंद अजीणं।
बंह-जिण-रिसह-रिसहाणं, आदि पहु-जिणराज-गुणाणं।।7।।
चंद-जुदि-चरू-चंद सुहाणं, माण-मदण-धुद-माणत्थाणं।
मेरू-सिहर-वण-पंडुगाणं, विंस चदु चदु वय दिगंताणं। ।8।।
तित्थ-अहि अहि णंदण-णाधं, चंद-जिणवरण्हु आदिणाधं।
इंद-वर-गुण-मुणिंद-झाणं,घादिघणचदु-अर्थादि-घाणं ।।9।।
मेरू-पहु-अजिय-जिणणाधं, चंद पहु-पहु पारस-णाधं।
चंदरदण सचंदय णाधं, पारस-चिद सुचंदय णाधं ।।10।।
णेमि-गुणगण-पारस णाधं, पारस-रदण चंदयणाधं।
णेमि अणुबम-संतिय णाधं, चंद चदुमुणि सुव्वय णाधं।।11।।
वासु-वसु मुणिसुव्वयणधं, चक्क सणि मुणि सुव्वय णाधं।
पुण्णमणुहर-वीर य णाधं, मल्लिमहिदपहु पारसपसाधं।।12।।
पारस-पहु सिरि संतिय णाधं, संति-फरस पारस-पसाधं।
बाहुबलि-वर-दत्त-रिसीणं, तार-भवदधि-धम्म सुधाणं।।13।।
अम्हो दय-गिरि-भाग-यचंदो, तोस-सतीस सुरेसय चंदो।
विमला विमल-फूलय चंदो, णेण-दलपदबम्होरि चंदो। ।14।।
मिच्छतमस-विणासण-खेत्ते, सुज्ज-पभव-पभवय-मेत्ते।
अहिंस कण-कण मूले मूले हु, णेणणयणणयणाहिरामे।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिपार्श्वप्रभुवरेभ्यो.......जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामिति स्वाहा।

।। इदि पुप्फललिं।।

Composed by : Prof. Uday Chand Jain, Udaipur

## संतिथुदि

उम्मग्ग-संठियाणं, भव्वाणं मोक्खमग्ग-देसयरं।
अप्पसरूवम्मि ठिदं संति-जिणेसं णमंसामि ।।1।।

केवलणाणदिणेसं, चोत्तीससादिसयभूदिसंपण्णं ।
संदरिसियसयलत्थं, संति-जिणेसं णमंसामि ।।2।।

संसारण्णवमहणं तिहुवणभवियाण सोक्खसंजणणं।
पालयदि धम्मतिथं, संतिजिणेस णमंसामि ।।3।।

लोयालोय-पयासं, तिहुवणभव्वाण पेम्म-सुह जणणं ।
इंदसय-णमिदचरणं, संतिजिणेसं णमंसामि ।।4।।

संदरिसिय-सयलट्ठं, आदसरूवम्मि सव्वकालगदं ।
इंदियसोक्ख-विमुक्कं, संतिजिणेसं णमंसामि ।।5।।

घणघाइकम्ममहणं, मुणिंद-देविंद-पणदपयकमलं ।
धम्मेण परिणदप्पा, संतिजिणेसं णमंसामि ।।6।।

णिट्टवियघाइ-कम्मं, केवलणाणेण दिट्ठसयलट्ठं ।
अप्पसुहं संपण्णं, संतिजिणेसं णमंसामि ।।7।।

एस सुरासुरमणुसिंद-वंदिदं धोद-घाइ-कम्ममलं।
भव्वजणमोक्खजणणं, संतिजिणेसं णमंसामि ।।8।।

केवलणाणतिणेत्तं, दुरितहरं आजवंतवातीदं ।
भव्वकुमुदेक्क चंदं, संतिजिणेसं णमंसामि ।।9।।

सण्णाणरयणदीवं, लोयालोयप्पयासण-समत्थं ।
भव्वंबुज-वण-भाणुं संतिजिणेसं णमंसामि ।।10।।

इंदसदणमिदचलणं, अणंत सुह-णाण विरियदंसणया ।
जं णाणरयणदीवो संतिजिणेसं णमंसामि ।।11।।

कम्मकलंकविमुक्कं, केवलणाणे हि दिट्ठसयलट्ठं।
परमेट्ठी परमसुही, संतिजिणेसं णमंसामि ।।12।।

रागादिसंगमुक्को विसयातीदं अणोवममणंतं ।
अव्वुच्छिण्णं च सुहं, संतिजिणेसं णमंसामि ।।13।।

जो सव्व संगमुक्को, दोसो मोहो व जोगपरिमुम्मो ।
दंसणणाणसमग्गं, संतिजिणेसं णमंसामि ।।14।।

चउ-गइ-पंकविमुक्कं, णिम्मलवर-मोक्खलच्छि-मुहमुकुरं।
पणमह संतिजिणेसं, तित्थं धम्मस्स कत्तारं ।।15।।

चोत्तीसादिसएहिं, विम्हय-जणणं सुरिंदपहुदीणं ।
पणमह संतिजिणेसं सुमइकरं भव्य संघस्स ।।16।।

Acharya Pragya Sagar Ji

## 'आदस्स-महिला-सम्माणं'

सवणबेलगोला, 11 तो 13 अगस्त 2017 पज्जंतं आयोजिदं विसाल अहिल-भारदीय-जइणमहिलासम्मेलणम्मि कम्मजोइ-स्वास्ति-सिरी चारुकित्ति सामी, महोस्सवस्स अज्झक्खा सिरीमइ-सरिता-जइण वाराणसी णिवासी डॉ. मुण्णी-पुप्फा-जइणं (धम्मपण्णी डॉ. फुल्लचंद जइणो,) 'आदस्स-महिला-सम्माणं' (Best Women Award) पदत्तं। इदं सम्माणं 'बंभलिविए' बहुमुल्ल जोगदाण किदे पदत्तं।

**इंटरनेट-जुगे पागद-भासा अहोलिहिदलिंकम्मि वि उवलद्धा अत्थि-**

**फेसबुग-सुत्तं :** https://www.facebook.com/pages/Prakrit-Language-and-Literature/376483559110083?ref=hl

**Group -** https://www.facebook.com/groups/prakritlanguage/

**ब्लॉगसुत्तं :** http://prakritlanguage.blogspot.in/

**संपक्क-सुत्तं :** pagadbhasa001@gmail.com, +91 9711397716

TITLE - PAGAD BHASHA,
RNI - DELPRA/2015/59918, ISSN. 2454-5252
DCP (L) - NO. F.2 (P-22) PRESS/2014
LANGUAGE OF THE NEWS PAPER - PRAKRIT
PERIODICITY - HALF YEARLY
PRICE - FREE OF COST DISTRIBUTION

Printed Matter Posted Under P&T Guide Sec. 114(7)

To

.....
.....
.....
.....
.....
.....

STAMP

*If undelivered please return to-*
**JIN FOUNDATION, Behind Nanda Hospital, A93/7A, Chattarpur Extension, New Delhi-110074**

Declaration As Per Rule

Printed, Published and owned by **Ruchi Jain** and printed at Sonu Printing Press, Munirka, New Delhi-67 and published at **JIN FOUNDATION, A93/7A, Chattarpur Extension, New Delhi-110074,** Editor - **Dr. Anekant Kumar Jain.**